International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2017; Page No. 803-808

स्वच्छ भारत अभियान में अलवर जिले की भूमिका

[1] डॉ० पपलीराम, [2] डॉ० नरेन्द्र सीमतवाल
एसिसटेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान भारत।

सारांश
भारतीय समाज में सभी लोग सुखी रहें की भावना निहित रही हैं, इस कारण हमारे ऋषियों और मनीषियों ने मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक उपाय किये है। जिसमें स्वच्छता का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। आज व्यक्ति अनेक समस्याओं, तनावों, कुंठाओं, बीमारियों, विषादों और चिन्ताओं से घिरा हुआ है। इन समस्याओं के निदान के लिए सरकार अनेक प्रकार के समाधान खोजने का प्रयास करती रहती है। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को सवच्छ भारत अभियान की शुरूआत की, जिसका सपना महाम्मा गांधी द्वारा देखा गया था। स्वच्छ भारत अभियान का मुख्य उद्धेश्य गलियों, सडकों तथा अधोसंरचना को साफ सुथरा करना है एवं व्यक्ति कलस्टर और सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले शौच कम करना या समाप्त करना है।स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार ने तीन भागों में विभाजित किया है 1. शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान 2. ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान 3. स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय अभियान। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर समग्र सवच्छता अभियान देश के सभी राज्यों में सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है। राजस्थान के अलवर जिले में स्थित सनराइज विश्वविद्यालय ने भी स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए 'ग्रामीण स्वच्छता अभियान' चलाया है। इस अभियान में सनराइज विश्वविद्यालय की टीम ने अलवर जिले की रामगढ, लक्ष्मणगढ, राजगढ, मालाखेडा, किशनगढ, तहसील के ग्राम पंचायत मुख्यालयों तथा घनी आबादी वाले गॉवों की गलियों, सडकों, नालियों तथा विद्यालयों में जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामवासियों के सहयोग से साफ–सफाई की पहल की। इस ग्रामीण स्वच्छता अभियान के माध्यम से ग्रामवासियों को स्वच्छता के लिए जाग्रति पैदा करना, शौचालय निर्माण के लिए प्रेरित करना तथा इसमें भागीदारी निभाकर आमजन को स्वस्थ रहने का सुगम तरीका समझाने के प्रयास किये गये हैं।

मूल शब्द : समाज, समास्याऍं, स्वच्छता, संगठन, शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, विद्यालय, विद्यार्थी, जनप्रतिनिधि अभियान, उपभोक्ता, पर्यावरण, शौचालय, जन जाग्रति, निस्तारण।

प्रस्तावना
भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों, मुनियों और मनीषियों की धरती रही है। इसलिए भारतीय संस्कृति विश्व के आंगन में अपनी श्रेष्ठताओं और महानताओं के लिए प्रसिद्ध रही है। इसके मूल में 'सभी सुखी रहें' की भावना निहित रही है। इस कारण हमारे ऋषियों और मनीषियों ने मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक उपाय किए हैं जिनमें स्वच्छता का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। मानव एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्राणी होने के नाते सामाजिक संगठन और उसको निर्मित करने वाली अनेक समस्याओं एवं उनके समाधान का अध्ययन करता रहा है तथा उससे प्राप्त ज्ञान के आधार पर अपना जीवन सुखी और समृद्ध बनाने का प्रयास करता रहता है। मनुष्य के जीवन और उसकी खुशी के लिए स्वास्थ्य से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी अन्य वस्तु की कल्पना कर पाना कठिन है। स्वास्थ्य किसी भी समाज की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए अनिवार्य है।

जो भी व्यक्ति अथवा समाज स्वास्थ्य की दृष्टि से पिछडा हुआ है वह आधुनिक दौड में पीछे रहने को बाध्य है क्योंकि अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में व्यक्ति और व्यक्तियों से निर्मित समाज अपने गुणों के अनुरूप सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्ष्म नही हो पाते हैं। [1]

आज व्यक्ति अनेक समस्याओं, तनावों, कुंठाओं, बीमारियों, विषादों और चिन्ताओं से घिरा हुआ है। कुछ हद तक इन चिन्ताओं का जिम्मेदार स्वयं व्यक्ति होता है। इन से विमुक्ति के कुछ मार्ग समाज–सम्मत हैं, तो कुछ अन्य असामाजिक मार्ग हैं। समाज–सम्मत मार्ग व्यक्ति को उसकी वास्तविकता से परिचित कराते रहते हैं और उसका उचित मार्गदर्शन करते हैं, किन्तु इनका मार्ग दुष्कर व दुस्साध्य होता है, दूसरी ओर चिन्ताओं और तनावों से क्षणिक मुक्ति असामाजिक पथ का अनुसरण करने से भी व्यक्ति को मिल जाती है। [2]

स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत भारत सरकार द्वारा देश को स्वच्छ बनाने के लिए शुरू किया गया एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम करना है। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान स्वच्छ भारत अभियान का सपना महात्मा गॉधी द्वारा देखा गया था। इसके सन्दर्भ में गांधी जी ने कहा था कि स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।'' गॉधीजी के इसी सपने से प्रभावित होकर उन के 145 वें जन्म दिवस के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरूआत की तथा 2 अक्टूबर 2019 तक इस अभियान की पूर्ति का लक्ष्य रखा।

अधिकारिक रूप से भारत सरकार ने राज्यों के प्रयासों को सहयोग देने के उदेश्य से 1986 में केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम आरम्भ किया था लेकिन इसके लिए आंवटित राशि उतनी नही थी कि यह कार्यक्रम प्रभावी ढंग से आगे बढ सके। इसी कमी को देखते हुए इसे 1 अप्रेल 1999 से सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान (टीएससी) में बदल दिया गया। 1 अप्रेल, 2012 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा इस कार्यक्रम को निर्मल भारत अभियान (एनबीए) नाम दिया गया। इसका उदेश्य सामुदायिक सन्तुष्टि दृष्टिकोण अपना कर ग्रामीण भारत को निर्मल भारत में परिवर्तित करना तथा 2022 तक सभी ग्रामीण परिवारों को शत प्रतिशत स्वच्छ करना था। 24 सितम्बर 2014 को केन्द्रीय मंत्रीमण्डल की मंजूरी से 'निर्मल भारत अभियान'

को स्वच्छ भारत अभियान के रूप में पुनर्गठित किया गया है जिसका मुख्य उद्देश्य गलियों, सडकों तथा अधोसरंचना को साफ सुथरा करना एवं व्यक्ति क्लस्टर और सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच को कम करना या समाप्त करना है। स्वच्छ भारत मिशन शोचालय उपयोग की निगरानी के जवाबदेह तंत्र को स्थापित करने की भी एक पहल करेगा। इसके लिए भारत सरकार ने महात्मा गांधी के जन्म की 150वी वर्षगांठ (2 अक्टूबर 2019) तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रूपये की अनुमानित लागत के 1.2 करोड शौचालयों का निर्माण करके भारत को खुले में शोच मुक्त करने का लक्ष्य रखा है।[3]

स्वच्छता मानव की एक आदर्श जीवन शैली है, जिसे भारत में अभी दृढता के साथ स्थापित करने की आवश्यकता है। स्वच्छता क्या है? इसको अनेक विद्वानों एवं संस्थाओं ने अपने–अपने तरीके से समझाने का प्रयास किया है। मुख्य रूप से 'स्वच्छ' शब्द का अर्थ है– अत्यन्त साफ, विशुद्ध, उज्जवल एवं स्वस्थ्य। स्वच्छ शब्द में 'ता' प्रत्यय जोड़ने पर भाववाचक 'स्वच्छता' बनता है। स्वच्छता का तात्पर्य है –सब प्रकार से साफ–सफाई, निर्मलता एवं पवित्रता। मन–हृदय की, शरीर एवं वस्त्रों की, घर–बाहर, पानी –वायु–भूमि आदि की निर्मलता या सफाई रखना ही स्वच्छता है। स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य, अच्छे संस्कार एवं सुसभ्यता की निशानी है। इससे मानव के उत्तम आचार–विचार का पता चलता है। गन्दगी न रखना या गन्दगी से घृणा रखकर उसे दूर करना ही स्वच्छता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने स्वच्छता को कई प्रकार से परिभाषित किया है।[4]

1. 'लोगों को स्वच्छता के लिए शौचालयों व दूषित पानी को स्वयं स्वच्छ रखने के साधनों व उपायों को करने की आवश्यकता ही स्वच्छता है।
2. स्वच्छता का सामान्य आशय उन प्रावधानों, सुविधाओं सेवाओं से है जो मानव से मल–मूत्र और कचरे आदि का सुरक्षित निस्तारण करते हैं।
3. बहुत से व्यवसायी लोगों ने स्वच्छता को एक बहुत बडा विचार बताते हुए इसमें मानव के मल–मूत्र, कचरे आदि का सुरक्षित संग्रहण, भण्डारण, उपचार निस्तारण तथा पुनः प्रयोग करने पर बल दिया है।
4. ठोस कचरे का पुनः प्रयोग और पुनः चक्रण का प्रबन्धन करना ही स्वच्छता है।
5. पारिवारिक दूषित जल की निकासी और निस्तारण एवं पुनः प्रयोग के उपाय करना ही स्वच्छता है।
6. तूफान के पानी की निकासी व्यवस्था, औधौगिक कचरा, खतरनाक कचरा जैसे रासायनिक कचरा, रेडियोएक्टिव कचरा और अस्पतालों का कचरा आदि का संग्रहण व निस्तारण करना ही स्वच्छता है। [4]

स्वच्छता की समस्या

स्वतंत्रता के 67 वर्षों के पश्चात् स्वच्छता भारत की एक बहुत बडी सामाजिक ही नहीं, वैयक्तिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्या के रूप में मौजूद हैं। जहॉ एक ओर हमारे देश के शहरों की कच्ची बस्तियों, गॉवों एवं ढाणियों में शौचालयों की व्यवस्था नहीं है, वही विद्यालयों में उचित पेयजल एवं शौचालयों की कमी हैं जो कि 2011 की जनगणना में साबित हो गया हैं। आज भी लोग खुले में शौच करने के लिए मजबूर है। खुले में शौच करने से गन्दगी बढती है तथा पेयजल के साथ वातावरण भी दूषित होता है।

आज भी गॉवों या कमोबेश शहरों में जातिगत, वर्गगत सम्प्रदायगत और समूहगत जो जटिलताएं मौजूद हैं, उसकी तह में कहीं–न–कहीं विचारों और मान्यताओं की भी बहुत बडी भूमिका है। जाति, वर्ग और सम्प्रदाय से जहॉ लोगो की पहचान जोडी जाती है, वहॉ स्वच्छता और साफ–सफाई को भला कैसे सामूहिकता एवं सामाजिकता से जोडकर देखा जाए।

भारत के कुछ प्रान्तों यथा केरल, मिजोरम, लक्ष्यदीप और सिक्किम को छोडकर बाकी प्रान्तों के शहरों व गॉवों में गन्दगी तथा कचरे की बहुत बडी समस्या है। शहरों व गांवों में गन्दगी केवल स्लम बस्तियों तक सीमित नही है या झुग्गियों में रहने वाले केवल गन्दगी फैलाने के दोषी नहीं है बल्कि समाज का हर वर्ग अपने स्तर पर गन्दगी फैलाने का दोषी है जो एक अहम समस्या है। यदि हम केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के नवीन ऑकड़ों पर दृष्टि डालें तो हम पाएंगे की देश के छोटे शहरों की अपेक्षा बडे शहरों में अस्वच्छता या गन्दगी का फैलाव बहुत बडे पैमाने पर हैं। हमारे देश में 6 करोड टन कचरा हर वर्ष पैदा होता है और यह दिनों–दिन बढता ही जा रहा हैं। इस 6 करोड टन कचरे में एक करोड टन कचरा केवल दिल्ली, कोलकता, मुम्बई, बंगलुरू, चेन्नई जैसे बडे शहरों में पैदा हो रहा है। दिल्ली में अकेले 9000 मीट्रिक टन कचरा प्रतिदिन पैदा होता है। इसी प्रकार चेन्नई में 16 लाख टन, मुम्बई में 6600 मैट्रिक टन, कोलकाता में 11 और हैदराबाद में 14 लाख टन कचरा हर साल पैदा होता है। इसी क्रम में पश्चिम बंगाल में 45 लाख टन और उत्तर प्रदेश में 42 लाख टन कचरा या कूडा पैदा होता है। हम इससे अनुमान लगा सकते है कि सारे देश में विशेष कर बडे शहरों में कचरे का साम्राज्य स्थापित हो चुका है। यह समसया महज कुछ शहरों या ग्राम ढाणियों की नहीं है बल्कि सम्पूर्ण भारत की है।

ग्रामीण क्षेत्र में अच्छी संरचना, आवास और स्वच्छता प्रदान करने वाले संसाधनों का अभाव तथा राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से उपलब्ध धन का सही अनुप्रयोग नहीं होना, सरकार द्वारा संचालित ग्रामीण विकास की योजनाओं का ठीक से लागू नही हो पाना भी एक बहुत बडी समस्या है।

आधुनिक काम में तेजी से बढते शहरीकरण औधोगिकरण तथा वातावरण प्रदूषण का बढता प्रभाव, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से निकलने वाले अवशिष्ट/गन्दगी का सही समय पर उचित प्रबन्धन नही होना, जिसके कारण गन्दगी जनित बीमारियॉ फैलने लगती है जो एक विकट समस्या है। आज ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के आसपास औधोगिक इकाइयों, अस्पताल आदि से निकलने वाले रसायन युक्त गन्दगी, कचरा, दूषित पानी, विषैले पदार्थ, रेडियोएक्टिव पदार्थ, विस्फोटक सामग्री का कचरा आदि से अस्वच्छता बढती जा रही है जो देश के सामने स्वच्छता की सबसे बडी समस्या है।

स्वच्छता की एक अन्य बडी समस्या हम सभी लोगों में सामाजिक भागीदारी का अभाव है जिसे की हम सरकारी या गैर सरकारी संस्थाओं की जिम्मेदारी मानते हैं आज स्वच्छता के प्रति हमारी लापरवाही, गैर जिम्मेदार नजरिया और कर्तव्यों का संकुचित दृष्टिकोण के कारण ही देश की पवित्र नदियां, नहरे और झीले प्रदूषित होती जा रही हैं। गंगा, यमुना, कोसी, घाघरा, गोमती और अन्य नदियॉ इस कदर प्रदूषित हो गई है कि इनका पानी स्नान करने लायक भी नही रह गया हैं।

राजधानी दिल्ली का पानी पीने के काबिल नही रह गया है। चंढीगढ स्थित लैबोरेटरी के परीक्षण के मुताबिक दिल्ली में जमीन के नीचे के पानी में फैलोराइड की मात्रा तय सीमा से बहुत अधिक 1000 गुणा तक पाया गई है। इसी तरह कैल्शियम मैगनिशियम, कॉपर सल्फेट, नाइट्रेट, फलोराइड, पफैरिक लोह और कैडिमियम

की मात्रा लगातार बढती जा रही है। इन तत्वों की अधिक मात्रा युक्त पानी पीने से हृहयघात, किडनी पर बुरा असर, लीवर संक्रमण, गैस्ट्रिक कैंसर, दांत सम्बन्धित बीमारिया नर्वस सिस्टम पर बुरा असर, त्वचा सम्बन्धी रोग, तनाव, अस्थमा, थॉयराइड हृहय समबन्धी रोग, डायरिया और ऑख सम्बन्धी अनेक समस्याए बहुलता से बढती जा रही है।

स्वच्छता अभियान की आवश्यकता एवं महत्व

स्वच्छ भारत अभियान 'भारत सरकार द्वारा चलाया गया प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। यह शहरी व ग्रामीण लोगों के लिए मांग आधारित जन केन्द्रित अभियान है जिसमें लोगों की स्वच्छता सम्बन्धी आदतों को ओर बेहतर बनाया जा सके, स्वास्थ्य सम्बंधी सुविधाओं की मांग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराने जिससे आम लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

विश्व के विकसित देशों में विकास और आधुनिकता के जो मानक तय किये गये हैं उनमें स्वच्छता का महत्वपूर्ण स्थान है। हम उन विकसित देशों के मॉडल को अपना कर आगे बढने की बात तो करते हैं, लेकिन क्या उन मानकों को भी विकास और आधुनिकता में सम्मिलत करने के लिए तैयार हैं। इस पर विचार करने की महति आवश्यकता हैं। स्वच्छता का दायरा इतना विस्तृत है कि इसे अमल में लाने के लिए कई स्तरों पर विचार करने की आवश्यकता है। मन, वाणी, कर्म, शरीर, हृदय, चित्त, समाज, परिवार, संस्कृति और व्यवहार से लेकर धर्म ओर विज्ञान तक में स्वच्छता का विशेष महत्व है या यो कहे कि बिना स्वच्छता के जीवन, परिवार, समाज, संस्कृति राष्ट्र, विश्व और चेतना के उच्च आदर्श को प्राप्त करना असम्भव है। हमारी सरकार ने ऐसी अनेक योजनाऍ मिशन के रूप में कार्यान्वित कर रखी हैं जो सीधे – सीधे देश के प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ी हुई हैं। ये योजनाऍ व्यक्ति से होती हुई परिवार, समाज और देश के प्रत्येक क्षेत्र को जोड़ती हैं। इसमें 'स्वच्छता मिशन' भी एक है।[3]

भारतीय दर्शन में शरीर, आत्मा, मन, बुद्धि तथा पर्यावरण को शुद्ध रखना मानव जीवन का महत्वपूर्ण कार्य बताया गया है। प्राचीन शिक्षा पद्धति में यज्ञोपवीत संस्कार के बाद शिष्य को स्वच्छ रहने की शिक्षा दी जाती थी। स्वच्छ भारत अभियान के प्रति लोगों का जागरूक होना अति आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढावा देने के लिए है, जो हर तरफ स्वच्छता लाने में किया जा सकता है। आज भारत में स्वच्छता को बढावा देने के लिए जिन पहलुओं की आवश्यकता है वे हैं 1. भारतवासियों को स्वच्छ रखने हेतु 2. पर्यटको का आकर्षण बढाने हेतु 3. नई–नई बिमारियों के निवारण हेतु।

स्वच्छता कार्यक्रम के द्वारा स्वच्छता की सुविधा विकसित करने के लिए निजी क्षेत्रों की भागीदारी को शामिल करके स्वच्छता कार्यक्रम को वृहत्त स्तर पर चलाना इसे और महत्वपूर्ण बना देता है जिससे स्वच्छ एवं सम्पन्न भारत बनाने में सहंयोग मिल सके। ग्रामीण क्षेत्रों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए इस कार्यक्रम की अति –आवश्यकता हैं।

स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वच्छता का विशेष महत्व हैं। स्वच्छता से व्यक्ति रोग मुक्त जीवन जीता है और एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। लोगों द्वारा खुले में शौच करने, सडक पर कूडा फेकने, गन्दा पानी इकठठा करने आदि से अस्वच्छता फैलती है जिससे हैजा, पैचिस, टायफाइड, मलेरिया जैसी–अनेक बीमारियां समाज में फैलती हैं। अतः खुल में शौच नही करने तथा स्वच्छ रहने से अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है जो कि स्वच्छता से ही सम्भव है।

स्वस्थ शरीर, मन और आत्मा के लिए स्वच्छता महत्वपूर्ण है। प्रत्येक व्यक्ति को खासकर स्कूल में विद्यार्थियों को सफाई का महत्व सिखाया जाता है। विद्यालयों में स्वच्छता सम्बन्धी अनेक बार भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन कार्यक्रम इसलिए करवाये जाते हैं ताकि जीवन में स्वच्छता के महत्व को उतार सकें। हमारे घर, कार्यस्थल, सार्वजनिक स्थान, सडके आदि को स्वच्छ रखना हम सभी का कर्तव्य है। जिस प्रकार भोजन पानी, ऑक्सीजन और अन्य चीजे हमारे अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है वैसे ही हमारे शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए स्वच्छता भी महत्वपूर्ण है। स्वच्छता की आवश्यकता एवं महत्व का विवेचन प्राचीन धर्म शास्त्रों में भी मिलता है। वेद में वैज्ञानिक व्याख्या में स्वच्छता के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि हम मल, मूत्र और अन्य चीजों से दिनभर जितनी गन्दगी फैलाते है, उसे समाप्त करने के लिए प्रतिदिन सुगंधित जडी–बूटियों से हवन करना हमारा दैनिक कर्तव्य है।, ऐसा न करना पाप है यानि प्रकृति को गन्दा करके स्वच्छ न करना भारतीय संस्कृति में पाप माना गया है। स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए भारत सरकार ने इसे तीन भागों में विभाजित किया है–

1. **शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान** : स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता लाने हेतु सार्वजनिक स्थलों के पास या अन्य स्थानों के पास कूडा, गन्दगी, कचरे का ढेर, घर का गन्दा पानी इत्यादि से फैली गन्दगी को अक्टूबर 2019 तक साफ सुथरा बनाने के प्रयास किये जायेंगे। इसमें कचरा प्रबन्धन, सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना आदि भी सम्मिलित है। अभियान का उदेृश्य 1.04 करोड परिवारों को लक्षित करते हुए 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस अपशिष्ठ प्रबन्धन की सुविधा प्रदान करना है। आवासीय क्षेत्रों में जहॉ व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण करना है वहॉ सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना, पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस स्टैण्ड, रेल्वे स्टेशनों जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जाएगा। कार्यक्रम पॉच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू किया जायेगा इस कार्यक्रम पर कुल 62009 करोड रुपये खर्च करने का प्रावधान रखा गया है जिसमें केन्द्र सरकार की तरफ से 14623 करोड रूपये उपलब्ध कराये जायेगे। केन्द्र सरकार द्वारा प्राप्त होने वाले 14623 करोड रुपयों में से 7366 करोड रुपये में ठोस अपशिष्ठ प्रबन्धन पर 4165 करोड रुपये व्यक्तिगत घरेलु शौचालयों पर, 1828 करोड रुपये जनजागरुकता पर और समुदाय शौचालय बनवाये जाने पर 655 करोड रुपये खर्च किये जायेगे। स्वच्छ भारत अभियान के तहत खुले में शौच अस्वच्छ शौचालयों को सुलभ शौचालय में परिवर्तित करने, मैला ढोने की प्रथा का उन्मूलन करने, नगरपालिका ठोस अपशिष्ठ प्रबन्धन और स्वच्छ एवं स्व्च्छता से जुडी प्रथाओं के सम्बन्ध में लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना शामिल है।
2. **ग्रामीण क्षेत्रों में सवच्छ भारत अभियान** : ग्रामीण स्वच्छ भारत अभियान, निर्मल भारत अभियान 1999 का ही पुनर्गठित रूप है। यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के लिए मांग आधारित एवं जन केन्द्रित अभियान है, जिसमें लोगों की स्वच्छता सम्बन्धी आदतों को बेहतर बनाना, स्व सुविधाओं की मांग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध करना, जिससें ग्रामीणों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

   ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश में लगभग

11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौतीस हजार करोड रूपये खर्च किया जाएंगे। बडे पैमाने पर प्रोद्योगिकी का उपयोग कर ग्रामीण भारत में कचरे का इस्तेमाल उसे पूंजी का रूप देते हुए जैव उर्वरक और उर्जा के विभिन्न रूपों में परिपर्तित करने के लिए किया जायेगा।

स्वच्छ भारत अभियान को युद्ध स्तर पर प्रारम्भ कर ग्रामीण आबादी, विद्यालय शिक्षको और विद्यार्थियों के बडे वर्गो के अलावा प्रत्येक स्तर पर संचालित कराना है। प्रत्येक पारिवारिक इकाई के अन्तर्गत व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की इकाई लागत को सरकार के द्वारा 10000 से बढाकर 12000 रुपये कर दिया गया है और इसमें हाथ धोने, शौचालय की सफाई एवं भंडारण को भी शामिल किया गया है। इस तरह के शौचालय निर्माण हेतु केन्द्र सरकार की तरफ से 9000 रुपये एवं राज्य सरकार की तरफ से 3000 रुपये की सहायता का प्रावधान है। जम्मू एवं कश्मीर एवं उत्तर पूर्व राज्यों एवं विशेष दर्जा प्राप्त राज्यों को केन्द्र सरकर 10800 रुपये तथा राज्य सरकार 1200 रुपये शौचालय निर्माण हेतु सहायता राशि देती हैं।

3. **स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान :** यह अभियान केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 25 सितम्बर 2014 से 31 अक्टूबर 2014 के दौरान केन्द्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालय संधों में आयोजित किया गया। इसके तहत स्कूलों में कई स्वच्छता गतिविधियॉ आयोजित की गई जैसे विद्यार्थियों द्वारा स्कूल में विभिन्न सफाई पहलुओं पर चर्चा, शौचालयों, पैंट्री क्षेत्रों, स्कूल क्षेत्र में सफाई पर योगदान पर भाषण, स्वच्छता पर निबन्ध लेखन, प्रतियोगिता, बहस, कला, पेंटिग, फिल्म शौ, इत्यादि को अपनाकर स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय के लिए विद्यार्थियों में जागृति पैदा करना।[5]

स्वच्छ भारत अभियान में सनराइज विश्वविद्यालय का योगदान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर समग्र सवच्छता अभियान देश के सभी राज्यों में सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है। राजस्थान के अलवर जिले में स्थित सनराइज विश्वविद्यालय भी स्वच्छ भारत अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सामाजिक सेवा एवं बच्चों को शुलभ शिक्षा उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभा रहे, सनराइज विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ0 वी0के0 अग्रवाल ने माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान से प्रेरित होकर तथा स्वच्छता के प्रति जिले में जागरुकता लाने के लिए 'ग्रामीण स्वच्छता अभियान' को संचालित किया। इस अभियान को अन्जाम देने के लिए कुलपति डॉ. एस. के. गुप्ता के निर्देशन मे एक ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम समिति' बनाई जिसमें प्रो. हरि भूषण, डा. कैलाश सेवल, डॉ. पपलीराम, डॉ. नरेन्द्र सीमतवाल, डॉ. सविता गुप्ता जहीर खान, अजय कुमार शर्मा, नरेश चन्द एवं सफाई कर्मचारियों सहित प्रत्येक चरण के लिए 40 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय द्वारा सफाई के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरण जैसे फावड़ा, गैंती, परात, पंजी झाडू, एवं अन्य उपकरण तथा समिति के सभी सदस्यों व विद्यार्थियों को अल्पहार की व्यवस्था की गईं। 'ग्रामीण स्वच्छता समिति' ने अलवर के गॉवों को स्वच्छ बनाने एवं जागृति लाने के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किये जो निम्न प्रकार है–

1. स्वयं सफाई कर स्वच्छता की पहल करना तथा ग्रामीणों को इसके लिए प्रेरित करना।
2. ग्रामवासियों को, विशेषकर जनप्रतिनिधियों को स्वच्छता अभियान से जोड़ना।
3. ग्रामवासियों को एक चोपाल पर इकट्ठा कर स्वच्छता संम्बन्धी जानकारी प्रदान करना एवं अस्वच्छता के कारण, अस्वच्छता से होनी वाली बीमारियों जैसे हैजा, टायफाइट, मलेरिया, डिपथीरिया से अवगत कराना।
4. ग्रामवासियों को खुले में शौच से मुक्त करने के लिए प्रेरित करना तथा ग्रामीण विकास योजनाओं विशेषकर शौचालय निर्माण हेतु सरकार द्वारा चलाई गई योजना के बारे में जानकारी देना।
5. ग्रामीण स्कूलों में संगोष्ठी कर विद्यार्थियों को स्वच्छता की आवश्यकता एंव महत्व के बारे में अवगत कराना तथा स्वच्छता पर निबन्ध लेखन, भाषण वाद–विवाद प्रतियोगिता, पोस्टर इत्यादि कार्यक्रम करवाना एवं स्वयं स्वच्छ रहकर पडोसियों को स्वच्छ रहने के लिए प्रेरित करना।

ग्राम पंचायत मूनपुर में स्वच्छता कार्यक्रम

ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम के प्रथम चरण में ग्राम पंचायत मूनपुर में विश्वविद्यालय की ग्राम स्वच्छता समिति नें ग्रामवासियों के सहयोग से सडक, नालियॉ, स्कूल प्रांगण एवं आस–पास फैली गन्दगी को साफ किया। समिति ने ग्रामवासियों को एक चौपाल पर इकठ्ठा किया, जिसमें सरपंच कमलारानी पत्नि चेतराम, पंच खेमचन्द, जिला पार्षद धर्म चन्द चौधरी, तथा गॉव के 30–35 लोग सम्मिलित हुए। समिति ने ग्रामीणों को स्वच्छ ग्राम बनाने के लिए शौचालयों, नालियों तथा कूडे के लिए कूडेदान का उपयोग पर बल देने की अपील की। [6]

ग्राम बारा भडकोल में स्वच्छता कार्यक्रम

ग्रामीण स्वच्छता अभियान के दूसरे चरण में विश्वविद्यालय की टीम ग्राम–बारा भडकोल पहुॅची जहॉ राजकीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल एवं ग्राम में सड़क एंव नालियों में फैली गन्दगी को ग्रामीण वासियों के सहयोग से स्वच्छ किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षको के सहयोग से स्वच्छ ग्राम बनाने का सन्देश आस–पास के गावों में पहुचाने का प्रयास किया। इस कार्यक्रम के दौरान ग्राम छिलोड़ी के पूर्व सरपंच हसमल खान, छुटमल खान, भडकोल के वर्तमान सरपंच रामकिशोर एवं ग्राम महाराजपुरा के मंगतूराम, नन्दकिशोर, कैलाश चन्द, जगदीश, हुसैन खान, नबी खान तथा स्कूल सटाफ ने सनराइज विश्वविद्यालय के ग्रामीण स्वच्छता मिशन की प्रशंसा करते हुए माननीय प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए एक अच्छी पहल करार दिया।[7]

ग्राम पंचायत गण्डूरा में स्वच्छता कार्यक्रम

ग्राम गण्डूरा मेवका बडोदा– लक्षमणगढ रोड पर स्थित घनी आबादी वाला गॉव है, जहॉ सीनियर सैकण्डरी स्कूल एंव सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र है। विश्वविद्यालय की ग्राम स्वच्छता कार्यक्रम समिति ने तृतीय चरण में गॉव के सरपंच, अजीत सिंह, पूर्व सरपंच अजय सिंह तथा स्थानीय ग्रामवासियों के सहयोग से नालियों, सडक, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, विद्यालय परिसर, खेल ग्राउन्ड आदि की साफ सफाई की। स्वच्छता अभियान टीम, ग्राम वासियों एवं विद्यालय शिक्षकों ने मिलकर इस कार्यक्रम को वृहत स्तर पर लाने की पहल की। टीम ने विद्यार्थियों को स्वच्छ ग्राम–स्वस्थ ग्राम बनाने लिए प्रेरित किया तथा स्वच्छता अभियान को जन–जन तक पहुचाने का भी संदेश दिया। ग्राम पंचायत गण्डूरा के सरपंच, स्कूल के कार्यवाहक प्राचार्य कैलाश चन्द वर्मा, ओमप्रकाश तथा ग्रामवासियों ने स्वच्छता के इस अभियान को आम जनता के स्वास्थ्य से जोडते हुए एक बडी उपलब्धी बताया और स्वच्छता के प्रति सजग करने की पहल की।[8]

ग्राम पंचायत अलावडा में स्वच्छता कार्यक्रम

रामगढ तहसील की ग्राम पंचायत अलावडा में स्वच्छ ग्राम अभियान चलाया गया जहॉ स्वच्छता के प्रति ग्रामवासियों को जाग्रत किया गया। सफाई अभियान में विश्वविद्यालय टीम तथा ग्राम वासियों ने मिलकर गॉव में फैली गन्दगी, नालियॉ तथा गुरूद्वारा के आस–पास स्कूल ग्राउण्ड की सफाई की। अलावडा की सरपंच जसवीर कौर वार्ड पंच रमेश गुर्जर, चन्दन सिंह एवं पूर्व सरपंच कमलचन्द सहित ग्रामवासियों ने सनराईज विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे ग्राम स्वच्छता अभियान की न केवल सराहना की, बल्कि इस कार्यक्रम को एक बहुत बडी उपलब्धि करार दिया।[9] उनका कहना था कि यदि आम लोग स्वच्छ रहने पर बल देंगें तो अनेक बीमारियों से स्वत ही बचा जा सकता हैं। इस स्वच्छता अभियान के दौरान ग्रामवासियों से यह पूछा गया कि स्वच्छता का हमारे जीवन में क्या महत्व है? तो ग्राम के पूर्व सरपंच कमल चन्द ने बताया की अस्वच्छता के कारण अनेक बीमारियां फैलती है तथा इन बीमारियों से बचने के लिए स्वच्छता का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।[10]

ग्राम पंचायत दोहली में स्वच्छता कार्यक्रम

ग्रामीण स्वच्छता अभियान के पंचम चरण में रामगढ तहसील की ग्राम पंचायत दोहली में सरपंच जमालुद्दीन, पूर्व सरपंच महेन्द्र कृष्णन एवं ग्रामवासियों के साथ मिलकर विश्वविद्यालय टीम ने अटल सेवा केन्द्र, गॉव के मुख्य मार्गों के चारों तरफ फैली गन्दगी एवं नालियों को साफ किया तथा ग्रामीणों को टीम ने साफ–सफाई रखने, शौचालय निर्माण एवं स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। [11] इस दौरान ग्रामवासियों से यह जानना चाहा कि स्वच्छता क्यों आवश्यक है? तो ग्राम के सरपंच जमालुद्दीन ने बताया कि गन्दगी के कारण हैजा, पीलिया, मलेरिया आदि बीमारियां फैलने का खतरा रहता है साथ ही गन्दगी के कारण गॉव को हेय दृष्टि से देखा जाता हैं।[12]

ग्राम नसौरपुर में स्वच्छता कार्यक्रम

ग्रामीण स्वच्छता अभियान के छठे चरण में तहसील रामगढ के ग्राम नसोपुर में विश्वविद्यालय टीम द्वारा ग्राम स्वच्छता कार्यक्रम के तहत ग्राम में फैली गन्दगी को इकठ्ठा कर जलाया गया। साथ ही सडक, पानी की टंकी के आस–पास तथा नालियों को ग्रामवासियों के सहयोग से साफ किया गया। इस दौरान विद्यालय के व्यवस्थापक राम प्रकाश जाटव, गॉव के प्रभुदयाल प्रजापत, राहुल, दिव्या, रिंकी, नरेन्द्र एवं अन्य ग्रामवासियों को एक जगह बैठाकर उन्हे स्वच्छ ग्राम बनाने के लिए जाग्रत किया। ग्रामवासियों को अपने घर के आसपास फैली गन्दगी को साफ कर कूडा–कचरा एक जगह इकठठा कर कूडेदान में डालने के लिए प्रेरित किया जिससे ग्रामीण जीवन बेहतर बन सके।[13]

निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन

ग्रामीण स्वच्छता अभियान के दौरान सनराइज विश्वविद्यालय परिसर में आस–पास के गांवों के व्यक्तियों को स्वस्थ रहनें तथा स्वच्छता के प्रति जाग्रत करने के लिए निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में ब्लड प्रेशर, हड्डी रोग,जोडों के दर्द तथा विभिन्न बीमारियों की निःशुल्क जांच कर, निःशुल्क दवा ग्राम वासियों को दी गई! इस शिविर में वाई.पी.एस.एम. मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों एवं फार्मेसी कॉलेज के कर्मचारियो नें चिकित्सा सेवाए प्रदान की। इस शिविर में आस–पास के लगभग 450 रोंगियों ने चिकित्सा सेवाओं का लाभ लिया।[14]

ग्राम साहडोली में स्वच्छता कार्यक्रम

ग्रामीण स्वच्छता अभियान के सातवे चरण में ग्राम साहडोली में स्वच्छता अभियान को संचालित किया गया। यहां राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल परिसर, गॉव में सड़क, एवं नालियों की सफाई विश्वविद्यालय की टीम द्वारा की गई। इस कार्य में स्कूल प्रभारी योगेन्द्र सिंह एवं स्टाफ तथा स्थाई निवासियों में भूतपूर्व सरपंच कबीर खान, मजिद खान, समय सिंह आदि ने बहुत सहयोग दिया। सनराईज विश्वविद्यालय के इस कार्यक्रम की ग्रामवासियों ने बहुत सराहना की।[15]

सनराइज विश्वविद्यालय की स्वच्छता ग्राम समिति द्वारा चलाया जा रहा स्वच्छता ग्राम अभियान, अलवर जिले की रामगढ, लक्षमणगढ, राजगढ, मालाखेडा, किशनगढ तहसील के ग्राम पंचायत मुख्यालयों तथा घनी आबादी वाले गॉवों में चलाने के प्रयास किये गये हैं। विश्वविद्यालय द्वारा चलाये गये 'ग्राम स्वच्छता अभियान' के माध्यम से ग्राम वासियों में स्वच्छता के प्रति जाग्रति पैदा करना तथा स्वयं इसमें भागीदारी निभाकर आमजन को स्वस्थ रहने का सुगम तरीका समझाना भी है।

स्वच्छ भारत अभियान में हैल्पिंग हैण्डस अलवर का योगदान

स्वच्छ भारत अभियान में अलवर जिले की एक अन्य संस्था ''हैल्पिंग हैण्डस'' पिछले तीन वर्षों से सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। हैल्पिंग हैण्डस '' क्लीन अलवर मूवमैण्ट'' के रूप गॉव व शहर को स्वच्छ बनाने का प्रयास कर रही है। हैल्पिंग हैण्डस के संयोजक दीपक शर्मा से जब पूछा गया कि '' हैल्पिंग हैण्डस अलवर में किस उद्धेश्य को लेकर कार्य कर रही है? तो उन्होने बताया कि यह संस्था अलवर में सडक नालियों, पार्क, सार्वजनिक स्थानों अस्पतालो, सरकारी ऑफिसों आदि की साफ–सफाई के साथ–साथ लोगों में स्वच्छता के प्रति अपने अधिकारों के प्रति जागृति करने का भी प्रयास कर रही है। इस संस्था में अध्यक्ष–यश आरोडा, मंत्री–अंकित भार्गव, कोषाध्यक्ष–मनीष गुप्ता तथा शिल्पी शर्मा, रूचि भार्गव, गंगा, मोनिका, दीपक महावर, शाहरूख खान, युगल जैन, पुरूषोत्तम, दीक्षान्त यादव, चर्चिल कौशिक, यश कुमार, कृष्णा भारद्वाज, दीपक चन्द, कीर्ति, अभिषेक सहित लगभग 200 सदस्य कार्यरत है।[16]

हैल्पिंग हैण्डस, टीम ने ''क्लीन अलवर मूवमैण्ट'' के 156 वे सप्ताह के तहत रविवार को गौ सेवकों, क्रास पाइंट मॉल व गोल्स सिनेमा की टीम के साथ मिलकर भवानी तोप सर्किल स्थित राजकीय पशु चिकित्सालय में साफ–सफाई की और चार घण्टे तक चले इस अभियान में पशु चिकित्सालय से लगभग 5 ट्राली कचरा निकाला गया। [17]

157 वे सप्ताह के दौरान शहर को स्वच्छ शहरों की श्रेणी में जाने के लिए विजयनगर में प्रगति हॉस्पिटल के पीछे बडे पार्क को हैल्पिगं हैण्डस की टीम ने स्थायी निवासियों की सहायता से साफ–सुथरा किया और 2 ट्राली कचरा नगरपरिषद के कर्मचारियों ने ट्राली से बहार किया।[18] स्वच्छ शहर बनाने के लिए हैल्पिंग हैण्डस की टीम 158 वे रविवार को हसन खॉ मेवात नगर के पार्क में पहुची जहॉ स्थानीय निवासियों एवं बच्चों के सहयोग से 2 ट्राली कचरा बहार किया। इस दौरान टीम ने भविष्य में पार्क को गन्दा नही करने के लिए सलाह दी जिससे स्वास्थ्य अच्छा बना रहे।[19]

159 वे रविवार को लादिया मौहल्ले के पार्क में हैल्पिंग हैंण्डस की टीम पहुची तो पार्क का हाल सफाई नहीं होने से बेहाल था। इसके बाद टीम ने साफ–सफाई शुरू की जिसमें आस –पास के लोग भी सहयोग करने लगे जिससे ढाई घण्टे की मेहनत के बाद पार्क में

फैली पॉलीथीन, गन्दगी, बडी घास, कंटीली झाडियॉ, प्लास्टिक व कॉच की बोतलों को साफ किया। सफाई के बाद 2 ट्राली कचरा नगर परिषद की सहायता से बाहर किया गया, इसके साथ संस्था के सदस्यों ने स्थानीय लोगों से साफ–सफाई के बारे में चर्चा की और एनजीटी के नियमों की जानकारी उपलब्ध कराई। [20] क्लीन अलवर मूवमेन्ट के तहत हैल्पिंग हैण्डस की टीम ने 161 वे रविवार को बसंत विहार, स्कीन नम्बर 3 स्थित पार्क की साफ–सफाई की। टीम ने 2 ट्राली कचरा नगर परिषद की सहायता से बाहर किया। टीम के सदस्यों ने स्थानीय नागरिकों को स्वच्छता की शपथ दिलाई।[21]

अलवर शहर को स्वच्छ बनाने की हैल्पिंग हैण्डस की टीम 163 वे रविवार को शिवाजी पार्क स्थित 6 क ब्लाक के पाक में पहूँची जहॉ स्थानीय निवासियों एवं क्षत्रिय सोमवंशी युवा युवा संगठन की टीम भी राकेश नधेडिया के नेतृत्व में साफ–सफाई में साथ लग गई और पार्क को साफ कर एक ट्राली कचरा बहार निकाला। इस दौरान टीम ने स्थानीय निवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने का सन्देश दिया।

''क्लीन अलवर मूवमैण्ट'' के लिए हैल्पिंग हैण्डस की टीम को महावर ऑडिटोरियम में विकास फाउण्डेशन की और से आयोजित 'राजस्थान गौरव सम्मान समारोह' में स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु रिटायर्ड जनरल एवं विदेश राज्य मंत्री वी.के.सिंह ने स्मृति चिन्न व प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया।[22]

इस तरह ''हैल्पिंग हैण्डस'' के द्वारा पिछले तीन वर्षों से सफाई व्यवस्था, वाहन चलाते समय हैलमेट और सीट बैल्ट पहनना आदि के लिए गॉव–शहर के लगभग 50 जगहों पर नुक्कड नाटक से जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है तथा 5 से अधिक विद्यालयों व महाविद्यालयों में साफ–सफाई कर चुके है।[23]

ग्रामीण स्वच्छताः कुछ सुझाव

स्वच्छता मानव सभ्यता का एक श्रेष्ठ संस्कार है। स्वच्छता से समस्त पर्यावरण को स्वच्छ रखने की चेतना बढ़ती है। भारत में स्वच्छता अभियान एक अच्छी पहल है जिसें सरकार के साथ–साथ हमें भी पूरी ईमानदारी सें सफल बनाने के प्रयास करनें चाहिए। ग्रामीण स्वचछता अभियान से प्राप्त अनुभवों के आधार पर कुछ उपाय एवं सुझाव इस प्रकार है जिनको करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए :

1. गॉवो, ढाणियों एवं कच्ची बस्तियों में लोग खुले स्थान पर शौच करते है। इसके लिए सार्वजनिक शोचालयों के निर्माण की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. गांवों के लोगों को खुले में मल–मूत्र त्याग के निवारण हेतु जन जाग्रति जरूरी है, यह कार्य स्वच्छ ग्रामीण मिशन, ग्राम पंचायतों एवं समाजिक संगठनों के माध्यम से किया जाना चाहिए।
3. पेयजल, भूमि एवं वायु को गन्दगी से बचाव के लिए वैज्ञानिक उपाय खोजे जाये।
4. वायु प्रदूषण से रोकने के लिए प्रत्येक नागरिक को पेड़ लगाना और उनकी सुरक्षा करना अनिवार्य होना चाहिए।
5. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थों का पुनः उपयोग या निस्तारण के तरीके अपनाने की पहल करनी चाहिए।
6. प्रतिष्ठान प्रबन्धक को प्रदूषण के स्त्रोतों से दूरी बनाकर रखनी चाहिए।
7. औद्योगिक क्षेत्रों, अस्पतालों अन्य प्रतिष्ठानों से निकलने वाले हानिकारक अवशिष्ठ पदार्थो का निस्तरीकरण, उपचार अवश्य ही करना चाहिए।
8. वातावरण एवं जन स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाले उससे पूर्व ठोस कचरे का उपचार, निस्तारण, पुनः प्रयोग पुनः चक्रण करना चाहिए।
9. सरकार को शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के स्थानीय निकायों को ठोस कचरें के प्रबन्धन का प्रशिक्षण सुझाव एवं उचित संसाधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए।
10. सरकार को ऐसे कानून बनाने चाहिए, जिससे घरों, अस्पतालों एवं अन्य प्रतिष्ठानों से जो कचरा निकलता है उसे कूड़ा संग्रहण केन्द्र पर एकत्रित किया जाए तथा उचित जगह पर इसके निस्तारण की व्यवस्था होनी चाहिए।
11. उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं को कचरा न्यूनीकरण एवं पुनः प्रयोग वाले सामान के उपयोग पर बल देना चाहिए।

सन्दर्भ

1. रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस, रीवा, अंक–13, वर्ष 07, दिसम्बर,2012 पृ0324
2. शर्मा, वरेनद्र प्रकाश 'भारत में समाज, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2015, पृ0330
3. https:// hi.wikipedia.org
4. रिपोर्ट ऑफ बर्ल्ड हेल्फ ऑर्गनाइजेशन
5. https:// hi.wikipedia.org
6. दैनिक भास्कर, 2 नवम्बर, 2017
7. अरूणप्रभा, 7 नवम्बर, 2017
8. अरूणप्रभा, 9 नवम्बर, 2017
9. अरूणप्रभा, नवम्बर, 2017
10. अलावडा के पूर्व सरपंच, कमलचन्द से लिया गया साक्षात्कार
11. दैनीक भास्कर, 10 नवम्बर, 2017
12. दोहली के सरपंच, जमालुद्धीन से लिया गया साक्षात्कार
13. दैनिक भास्कर, 18 नवम्बर, 2017
14. अरूणप्रभा, 22 नवम्बर, 2017
15. अरूणप्रभा, 24 नवम्बर, 2017
16. संयोजक, दीपक शर्मा से लिया गया साक्षात्कार
17. दैनिक भास्कर, 13 नवम्बर 2017
18. दैनिक भास्कर, 21 नवम्बर 2017
19. दैनिक भास्कर, 22 अक्टूबर,2017
20. दैनिक भास्कर, 30 अक्टूबर, 2017
21. दैनिक भास्कर, 06 नवम्बर, 2017
22. दैनिक भास्कर, 11 दिसम्बर, 2017
23. संयोजक, दीपक शर्मा से लिया गया साक्षात्कार